प्रातः क्लास ओम 10/9/66

रिकार्ड–तुम्हें पाके.....। ओमशांति। मीठे–2 रूहानी बच्चों ने गीत सुना। रूहानी बच्चे ही कहते हैं कि हे बाबा। बच्चे जानते हैं यह बेहद का बाप सुख देने वाला है अर्थात् वो सबका बाप है। उनको सब बच्चे आत्मायें याद करती रहती हैं किस ना किस प्रकार से। याद करते हैं; परंतु उनको यह पता नहीं कि हमको कोई उस परमपिता परमात्मा से विश्व की बादशाही मिलती है। तुम जानते हो हमको बाप जो सतयुगी विश्व की बादशाही देते हैं वो अटल, अखंड, अडोल है। वो हमारी बादशाही 21 जन्म कायम रहती है। सारे विश्व पर हमारी राजाई रहती है। कोई छीन नहीं सकता। लूट नहीं सकता। हमारी राजाई है अडोल; क्योंकि वहाँ एक ही धर्म है। द्वैत है नहीं। वो है अद्वैत राज्य। बच्चे जब गीत सुनते हैं तो बुद्धि में अपनी राजाई का नशा होना चाहिए। ऐसे–2 गीत घर में रहने चाहिए, जिससे बाप और वर्से की झट याद आती है। बाप की याद की मस्ती गुप्त रहनी चाहिए। तुम्हारा सब कुछ है गुप्त। और बड़े–2 आदमियों का तो बहुत ठाठ होता है। तुमको कोई ठाठ नहीं है। तुम देखते हो बाबा ने जिसमें प्रवेश किया है उसमें भी ठाठ की कोई बात नहीं है। कपड़े आदि सब वो ही है। तुम बुद्धि से समझते हो इनमें बाबा ने प्रवेश किया है हमको यह राज–भाग देने। यह भी बच्चे जानते हैं यहाँ हरेक मनुष्य अनराइटियस, छी–2 काम ही करते हैं। जो भी इस समय मनुष्य, विद्वान, पंडित, साधु आदि हैं राजायें, प्रेसिडेंट सब अनराइटियस ही काम करते हैं। इसलिए बेसमझ कहा जाता है। बुद्धि को बिल्कुल ही ताला लगा हुआ है। तुम कितने समझदार थे। विश्व के मालिक थे। अब माया ने इतना बेसमझ बना दिया है जो कोई काम के ना रहे हैं। बाप के पास जाने लिए यज्ञ–तप आदि बहुत करते रहते हैं; परंतु मिलता कुछ भी नहीं। ऐसे ही धक्के खाते रहते हैं। जैसे कोई ऑर्फन धक्के खाते रहते हैं। दिन–प्रतिदिन अकल्याण ही होता जाता है। जितना–2 मनुष्य तमोप्रधान होते जाते हैं उतना ही अकल्याण होना है। ऋषि–मुनि जिनका गायन है वो पवित्र रहते थे। जब सतोप्रधान थे तो साफ कहते थे हम रचता और रचना के आदि–मध्य–अंत को नहीं जानते। नेती–2 कहते थे। अब तमोप्रधान बन गये हैं तो शिवोहम्, ततत्वम्। सर्वव्यापी परमात्मा है। तेरे में भी है, मेरे में भी है। वो लोग सिर्फ कहते हैं परमात्मा कह देते। परमपिता कब नहीं कहेंगे। परमपिता, फिर उनको सर्वव्यापी कहना यह तो रॉंग हो जाता। इसलिए फिर ईश्वर वा परमात्मा कह देते। पिता अक्षर बुद्धि में नहीं आता है। करके कोई कहते भी हैं तो भी सिर्फ कहने मात्र। अगर परमपिता कहेंगे तो बुद्धि एकदम चमक उठे। बाप स्वर्ग का वर्सा देते हैं। वो है ही हैविनली गॉड फादर। फिर हम कलियुग नर्क में क्यों पड़े हैं? अब हम मुक्ति–जीवनमुक्ति कैसे पा सकते? यह किसकी बुद्धि नहीं आता है। आत्मा पतित, बेसमझ होती जाती है। आत्मा पहले समझदार, सतोप्रधान थी। फिर रजो–तमो में आती है। बेसमझ बन पड़े हैं। अब तुमको समझ आई है। बाबा ने हमको यह स्मृति दिलाई है। जब नई दुनिया, नया भारत था तो हमारा राज्य था। एक ही मत, एक ही भाषा। एक ही महाराजा–महारानी थे। सतयुग में महाराजा–महारानी, त्रेता में राजा–रानी कहा जाता है। फिर द्वापर में वाममार्ग शुरू होता है। फिर हरेक के कर्मों पर मदार है। कर्मों अनुसार एक शरीर छोड़ दूसरा लेते हैं। अब बाप कहते हैं मैं तुमको ऐसा कर्म सिखाता हूँ जो 21 जन्म तुम बादशाही पाते हो। भल वहाँ भी हद का बाप तो मिलता है; परंतु वहाँ यह ज्ञान नहीं रहता कि राजाई का वर्सा बेहद के बाप ने दिया है। फिर द्वापर से रावण राज्य शुरू होता है। विकारी सम्बंध आ जाता है। फिर जैसे–2 कर्म ऐसा–2 फल। देवतायें वाममार्ग में चले जाते हैं, फिर सतयुग का सुख खलास हो जाता है। फिर कर्मों अनुसार जन्म मिलता है। भारत में राजायें पूज्य भी थे। सतयुग में यथा राजा–रानी तथा प्रजा पूज्य होते हैं। वहाँ पूजा वा भक्ति होती ही नहीं। फिर द्वापर में जब भक्तिमार्ग शुरू होता है तो यथा राजा–रानी तथा प्रजा पुजारी भक्त बन जाते हैं। बड़े ते बड़ा राजा जो सूर्यवंशी पूज्य था वो ही पुजारी बन जाते हैं। अब तुम जो वाइसलेस बनते हो उसकी प्रालब्ध 21 जन्म मिलती है। फिर भक्तिमार्ग शुरू होता है। जो–2 पूज्य देवी–देवतायें होकर गये हैं उन्हों के मंदिर बनाय पूजा (अधूरी मुरली)